



C R E A

2/14, दूसरी मंजिल, शांति निकेतन
नई दिल्ली - 110 021

Tel: 11-2411 7983 / 2411 4733 Fax: 11-2411 3209

Email: crea@vsnl.net Website: creaworld.org

समुदाय आधारित नेतृत्व कार्यक्रम

जेंडर व पितृसत्ता



प्रशिक्षण गाइड
क्रिया



परिचय

क्रिया का उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देकर उनको प्रोत्साहित करना तथा महिला नेताओं की एक नई पीढ़ी की क्षमता को बढ़ाना है। क्रिया मुख्यतः यौनिकता, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, लिंग समानता, सामाजिक न्याय तथा महिला अधिकारों के मुद्दों पर कार्य करती है।

क्रिया का मानना है कि हर स्त्री को – जीवन में उसकी स्थिति चाहे कोई भी हो – गरिमा का जन्मजात अधिकार है। इस गरिमा को बनाए रखने के लिए उसके मानव अधिकारों को सुदृढ़ करना आवश्यक है। यह कार्य महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को बढ़ा कर तथा स्थानीय, प्रांतीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्क स्थापित करने के साथ साथ प्रशिक्षण, पैरवी तथा शोध के द्वारा किया जाता है।

क्रिया के लिए नेतृत्व एक प्रक्रिया है – जिसमें महिलाएं प्रासंगिक अनुभवों के मूल्यांकन द्वारा समाज में अपनी भूमिका पर प्रश्न उठा कर शक्ति के ढाँचे को चुनौती देती हैं। इसके साथ ही प्रभावशाली रूप से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तनों की उत्प्रेरक बनकर अपने अधिकारों को सुदृढ़ करती हैं। इस प्रक्रिया में महिलाएं परंपराओं तथा पितृसत्ता के अस्तित्व पर भी सवाल उठाती हैं। महिलाओं की इसी कोशिश में क्रिया हर तरह से सहायता प्रदान करने का प्रयास कर रही है।

नई आवाजें, नए नेतृत्व – पहल के अंतर्गत क्रिया नेतृत्व विकास के कार्यक्रमों पर कार्य करती है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण तथा अधिकारों को संबोधित करते हैं। इबिदा समूह – समुदाय आधारित नेतृत्व कार्यक्रम का एक हिस्सा है। जिसके अंतर्गत क्रिया 15 संस्थाओं के साथ महिलाओं के एक समूह की नेतृत्व क्षमताओं को बढ़ाने, समुदाय तथा जिला स्तर पर नीतियों को प्रभावित करने के लिए वैचारिक, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक क्षमता प्रदान करने का प्रयास कर रही है।



जेंडर और पितृसत्ता दोनों ऐसे मुद्दे हैं जिन पर ना जाने कितनी किताबें लिखी गई हैं और ना जाने कितनी बैठकें आयोजित की गई होंगी, परंतु फिर भी हर बार यह मुद्दा कुछ नया सा लगता है और इसकी नई परतें खुल जाती हैं। इस मुद्दे पर जब भी कार्यशाला की जाती है कई नए सवाल सामने आते हैं.... कई नए जवाब दिए जाते हैं और इसीलिए हर बार कुछ नया सीखने को मिलता है।

क्रिया ने जब इबिदा समूह के साथ जेंडर तथा पितृसत्ता पर कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय लिया था तब यही लगा था कि सभी प्रतिभागी सदस्य महिलाओं के मुद्दों पर ही कार्य कर रही हैं और सभी ने जेंडर और पितृसत्ता पर कई कार्यशालाओं में भाग भी लिया होगा। परंतु हमने यह सोचा की यह प्रशिक्षण कमला भसीन द्वारा करवाते हैं क्योंकि वे शुरू से जेंडर, पितृसत्ता और नारीवाद पर कार्य करती आयी हैं और वे इस कार्यशाला में एक नया दृष्टिकोण भी ला सकती हैं। कमला भसीन वर्षों से भारत के महिला आंदोलन से जुड़ी रही हैं तथा उन्होंने इन मुद्दों पर एक नई समझ और दृष्टिकोण विकसित किया है। इनकी लिखी अनेक पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद भी हुआ है।

यह प्रशिक्षण गाइड कमला भसीन द्वारा संचालित उसी कार्यशाला का परिणाम है। इसमें दिए गए सभी अभ्यासों का प्रयोग कार्यशाला में किया गया था। कार्यशाला की रिपोर्ट देखने के बाद महसूस किया गया कि यदि इसे एक बुनियादी प्रशिक्षण गाइड में परिवर्तित कर दिया जाए तो अन्य लोग भी इससे लाभान्वित हो सकते हैं। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि क्रिया इसे एक प्रशिक्षण गाइड के रूप में प्रकाशित करेगी ताकि इन मुद्दों पर कार्य करने वाले अधिक से अधिक लोग एक संसाधन सामग्री के तौर पर इसका उपयोग कर सकें। आशा है यह प्रशिक्षण गाइड आप सभी को पसंद आएगी और आपके कार्य में उपयोगी सिद्ध होगी।



विषयवस्तु

विवरण

पेज न०

प्रशिक्षकों के लिए

प्रशिक्षण गाइड का उद्देश्य	4
प्रशिक्षक के लिये निर्देशन	5
प्रशिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारी	6
प्रशिक्षण की तैयारी	7
प्रशिक्षक गाइड की कार्य पद्धति	8

जेंडर

सत्र 1

1.1 स्वागत तथा प्रशिक्षण परिचय	10
1.2 बुनियादी नियम	11
1.3 अपेक्षाएं और आशंकाएं	12

सत्र 2

गतिविधि 2.1 : 'सोशियो ग्रामिंग'	13
गतिविधि 2.2 : हम कौन हैं?	14

सत्र 3

गतिविधि 3.1 : जेंडर क्या है?	18
गतिविधि 3.2 : जेंडर अनुकूलन	18
गतिविधि 3.3 : जेंडर व सेक्स में अंतर	20
गतिविधि 3.4 : जेंडर भेदभाव	22
गतिविधि 3.5 : जेंडर संबंध	24

पितृसत्ता

सत्र 4

4.1 जाति व्यवस्था के संदर्भ को स्थापित करना	34
4.2 पितृसत्ता की व्यवस्था क्या है और किस प्रकार कार्य करती है?	35
4.3 महिलाएं पितृसत्ता को सहयोग क्यों देती हैं?	37
4.4 नारीवाद क्या है?	41

परिशिष्ट

परिशिष्ट 1 : मौन तोड़ने वाले और उत्प्रेरक खेल (आइस-ब्रेकर एण्ड एनरजाइजर)	45
परिशिष्ट 2 : पितृसत्ता का इतिहास	46
परिशिष्ट 3 : मूल्यांकन पत्र	50
परिशिष्ट 4 : सामग्री	52



प्रशिक्षकों के लिए

प्रशिक्षण गाइड का उद्देश्य

प्रशिक्षक के लिये निर्देशन

प्रशिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारी

प्रशिक्षण की तैयारी

प्रशिक्षक गाइड की कार्य पद्धति



प्रशिक्षण गाइड का उद्देश्य

इस प्रशिक्षण गाइड को प्रशिक्षक एक सहायता यन्त्र के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इसे आवश्यकतानुसार संपूर्ण या आंशिक रूप से भी उपयोग किया जा सकता है। इस प्रशिक्षण गाइड में अनेक तरह के खेल तथा सामूहिक अभ्यासों को सम्मिलित किया गया है, जो कार्यशाला को रुचिकर बनाते हैं। इसमें 'जेंडर व पितृसत्ता' के मुद्दे को एक व्यवस्था के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। महिलाएँ यदि इन व्यवस्थाओं की शिकार होती हैं तो इससे उनकी कार्यक्षमता, सृजन क्षमता तथा गतिशीलता प्रभावित होती है और परिणामस्वरूप उनके प्रतिदिन का विकास भी प्रभावित होता है। अतः 'जेंडर व पितृसत्ता' का संबंध केवल किसी विशेष व्यक्ति, धर्म, जाति, वर्ग से नहीं बल्कि पूरी सामाजिक व्यवस्था से है, इसलिए इसके प्रभाव को इन सबसे जोड़ कर देखने का प्रयास किया गया है।

इस प्रशिक्षण गाइड के निर्माण के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- महिलाओं के प्रति हिंसा से लड़ने के लिए महिला संगठनों को सक्षम बनाना।
- प्रशिक्षक को कुछ ऐसे मूल मन्त्र प्रदान करना जो उनके दैनिक कार्यों में सहायक हों जैसे खेल, सामूहिक अभ्यास आदि।
- इस प्रशिक्षण गाइड को विशेषकर उन लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया है जो 'जेंडर व पितृसत्ता' से संबंधित कार्यों में संलग्न हैं।
- 'जेंडर व पितृसत्ता' के प्रति लोगों की सोच को व्यापक बनाना।
- इस मुद्दे पर कार्य शुरू करने वालों में विश्लेषण करने के साथ साथ जानने और पहचानने की प्रक्रिया का विकास करना।



- मुद्दे को सीमित दायरे से बाहर निकालकर विस्तृत स्तर पर देखने और विभिन्न प्रभावों के विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करना।
- 'जेंडर व पितृसत्ता' के कारण व प्रभावों को समझना।
- महिलाओं, समूहों, सरकारी प्रतिनिधियों तथा व्यापक समुदायों के बीच समान समझ स्थापित करना।
- 'जेंडर व पितृसत्ता' से लड़ने के लिए महिला संगठनों को सक्षम बनाना।

प्रशिक्षक के लिये निर्देशन

जेंडर तथा पितृसत्ता एक ऐसा विषय है जिस पर बात करना विभिन्न कारणों से आसान नहीं है। परंतु सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि यह हमारी समाजिक व्यवस्था में इस तरह से रच बस गया है कि इसे एक अलग मुद्दे के रूप में देखना बेहद कठिन है। कहीं न कहीं, किसी न किसी स्तर पर हम सब इसके शिकार हैं और इससे जुड़े हुए हैं।

महिला आंदोलन ने इस विषय पर काफी कार्य किया है और आज हम इस स्थिति में हैं जहाँ इसे एक मुद्दे के रूप में देख सकते हैं। यह केवल व्यक्तिगत मुद्दा नहीं है बल्कि यह देश की एक बड़ी जनसंख्या को प्रभावित करता है और इसीलिए इस विषय पर बात करना आवश्यक हो जाता है। अतः जब कोई व्यक्ति इस मुद्दे पर कार्य करता है तो पहले उसे व्यक्तिगत स्तर पर काम करना पड़ता है, जो हमेशा आसान नहीं होता।

इस मुद्दे पर प्रशिक्षण देते समय प्रशिक्षक को अपनी भावनाओं, मूल्यों तथा सोच का भी ध्यान रखना होगा। इसके साथ ही यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिन्हें अपनी बात समझा रहे हैं उन पर आपका क्या प्रभाव होता है। यह भी अति आवश्यक है



कि जिस विषय के बारे में आप बात कर रहे हैं, उस विषय के बारे में आप स्वयं संकोच महसूस ना करें।

किसी भी प्रशिक्षक के लिए कई मौकों पर अपनी सोच और भावनाओं पर नियंत्रण रखना मुश्किल हो सकता है, परंतु अच्छा प्रशिक्षक वही है जो सारे प्रशिक्षण के दौरान खुद को निष्पक्ष और गैर आलोचनात्मक स्थिति में रखे और स्वयं किसी भी विषय पर निर्णय देने से अलग रहे।

प्रशिक्षक की भूमिका तथा जिम्मेदारी

प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागी अपने प्रशिक्षक को उस विषय का पूर्ण जानकार समझते हैं। अतः प्रशिक्षक के लिये आवश्यक है कि वह सारी जानकारी से स्वयं को अवगत रखें और उस विषय में होने वाले नए विकास की भी नवीनतम जानकारी रखें।

प्रभावशाली रूप से प्रशिक्षण देने के लिये कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है, जैसे :-

- सभी लोगों को बोलने का मौका देना
- सभी की बातों पर पूरा ध्यान देना
- सभी को भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना
- सभी की व्यक्तिगत भावनाओं तथा सोच को महत्व देना
- प्रशिक्षण में हो रही चर्चा को भटकने ना देना
- चर्चा को सही दिशा में ले जाना
- चर्चा के दौरान विषय पर नियन्त्रण रखना



- प्रशिक्षण के दौरान संचालन के लिये समूह को नियम बनाने के लिए प्रोत्सहित करना
- प्रशिक्षण को रुचिकर बनाने के लिये विभिन्न खेलों तथा अन्य माध्यमों का उपयोग करना
- किसी भी विवादपूर्ण मुद्दे को सदैव सौहार्दपूर्ण तरीके से सुलझाने का प्रयास करना

प्रशिक्षण की तैयारी

प्रशिक्षण के सफल या असफल होने पर सारे लाभ और हानि की मुख्य जिम्मेदारी प्रशिक्षक पर होती है। प्रशिक्षण कितना सफल या असफल रहा इसकी जिम्मेदारी से चाहकर भी कोई प्रशिक्षक मुक्त नहीं रह सकता। इसलिए यह आवश्यक है की प्रशिक्षण को सफल बनाने के लिए हर संभव तैयारी पहले ही कर ली जाए।

प्रशिक्षण को आरम्भ करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है:

- प्रशिक्षण में कितने लोग भाग लेने जा रहे हैं
- भाग लेने वाले व्यक्तियों की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी
- उनकी शिक्षा, संस्था, लिंग आदि के बारे में जानकारी
- कार्यशाला तथा उससे जुड़े विषयों पर जानकारी
- भाषा की जानकारी जैसे – हिन्दी, अंग्रेजी या दोनों
- भाग लेने वाले लोग किस क्षेत्र में काम करते हैं



कई बार यह जानकारी भी बहुत आवश्यक हो जाती है कि जो लोग प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं वो स्त्रियों और पुरुषों के संयुक्त समूह में कार्य कर सकते हैं या नहीं, अन्यथा ऐसे लोगों के लिए आपको केवल पुरुष या केवल स्त्री का समूह ही बनाना होगा।

इन सारी सूचनाओं को पहले से ही एकत्र कर लेने से प्रशिक्षक को प्रतिभागियों की अपेक्षाओं को पूरा करने में अधिक आसानी होगी, साथ ही वे प्रशिक्षण को सही तरीके से संचालित कर पाएंगे।

प्रशिक्षण गाइड की कार्य पद्धति

कार्य पद्धति – कार्यशाला के लिए एक महत्वपूर्ण अवयव है। संचालन की पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो बातचीत को प्रेरित करे और चर्चाओं को शुरू करने में सहायक हो। दो या तीन दिनों तक प्रतिभागियों का ध्यान बनाए रखने के लिए कार्यशाला को रुचिकर बनाने के विभिन्न माध्यमों जैसे सामूहिक अभ्यास, विचार-विमर्शों, फिल्मों आदि के द्वारा कार्यशाला के सत्रों को सहभागितापूर्ण, आत्म-विचारक, व परस्पर बातचीत करने वाला बनाया जाना चाहिए। इन माध्यमों के द्वारा प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने में आसानी होती है।



जेंडर

सत्र 1

- 1.1 स्वागत तथा प्रशिक्षण परिचय
- 1.2 बुनियादी नियम
- 1.3 अपेक्षाएं और आशंकाएं

सत्र 2

- गतिविधि 2.1 'सोशियो ग्राभिग'
- गतिविधि 2.2 हम कौन हैं?

सत्र 3

- गतिविधि 3.1 जेंडर क्या है?
- गतिविधि 3.2 जेंडर अनुकूलन
- गतिविधि 3.3 जेंडर व सेक्स में अंतर
- गतिविधि 3.4 जेंडर भेदभाव
- गतिविधि 3.5 जेंडर संबंध



सत्र 1

1.1 स्वागत तथा प्रशिक्षण परिचय (45 मिनट)

- उद्देश्य:
- प्रतिभागियों का स्वागत तथा परिचय।
 - प्रशिक्षण के बारे में समूह को विस्तार से जानकारी देना।
 - कार्यशाला के लिए बुनियादी नियम बनना।
 - प्रतिभागियों की अपेक्षाओं के बारे में जानकारी हासिल करना।

खेल: क्या तुम्हें याद हैं?

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया

- प्रशिक्षण का आरंभ समूह के स्वागत व अपना परिचय दे कर करें।
- प्रशिक्षण शुरू करने से पहले उद्देश्यों को एक फ़्लिप चार्ट पर बड़े बड़े अक्षरों में लिख लें। "इस प्रशिक्षण का उद्देश्य 'जेंडर व पितृसत्ता' पर प्रशिक्षण देने के लिए समूह को सहायता प्रदान करना है"।
- संक्षेप में प्रशिक्षण की रूपरेखा के बारे में बताएं और प्रशिक्षण के उद्देश्यों को पढ़ कर सुनाएं।
- यह समझाएं कि प्रशिक्षक और प्रतिभागियों – दोनों के लिए यह प्रशिक्षण सीखने की दोतरफा प्रक्रिया है। इससे संबंधों को दोस्ताना बनाने में मदद मिलेगी, सत्र में सहभागिता बढ़ेगी और एक दूसरे से आसानी से बात हो सकेगी।
- प्रतिभागियों का आपस में परिचय कराने के लिए खेल का प्रयोग करें।



परिचय के लिए प्रस्तावित खेल

खेल 1: क्या तुम्हें याद है?

प्रतिभागियों को एक गोले में बैठने के लिए कहें। फिर उनसे उनका नाम और पसंदीदा फल बताने के लिए कहें और साथ ही उस फल और स्वयं में कोई समानता भी बताने के लिए कहें।

उदाहरण : मेरा नाम मंजुल है और मुझे सेब पसंद है क्योंकि मेरे गाल सेब की तरह लाल हैं।

खेल 2 : मेरा नाम.....

प्रतिभागियों से अपने नाम के पहले अक्षर के साथ अपनी एक खूबी/खामी बताने के लिए कहें।

उदाहरण : मेरा नाम सुकुमार सुनीता है।

1.2 बुनियादी नियम

कार्यशाला को सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। प्रतिभागियों को कार्यशाला के बुनियादी नियम बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि प्रतिभागियों से कोई नियम छूट गया हो और आपको लगता है कि वह जरूरी है, तो स्वयं आप भी नियमों को सूची में जोड़ सकते हैं। कुछ प्रस्तावित नियम निम्नलिखित हो सकते हैं, जैसे:-



- हम शुरू से अंत तक प्रशिक्षण में भाग लेंगे (चाय-पानी व दिन खत्म होने का समय स्पष्ट रूप से बता दें)।
- हम सब, सभी चर्चाओं में भाग लेंगे।
- हम प्रश्न पूछने या अपने संदेहों को स्पष्ट करने में नहीं हिचकिचाएंगे।
- प्रश्न सत्र के आखिर में पूछे जाएंगे।
- सब एक दूसरे के दृष्टिकोण का आदर करेंगे।
- बीच में कोई एक दूसरे से बात या चर्चा नहीं करेगा।
- प्रशिक्षण के दौरान बताए गए व्यक्तिगत अनुभवों को किसी बाहर के व्यक्ति को नहीं बताया जाएगा।
- कोई प्रश्न खराब प्रश्न नहीं है।

1.3 अपेक्षाएं और आशंकाएं

- संक्षेप में प्रशिक्षण की रूपरेखा के बारे में बताएं और प्रशिक्षण के उद्देश्यों को पढ़ कर सुनाएं
- प्रतिभागियों से पूछें कि प्रशिक्षण से उनकी क्या अपेक्षाएं हैं
- क्या प्रतिभागियों की कोई आशंकाएं हैं
- इससे समूह की आवश्यकताओं का आंकलन करना आसान होगा और यदि आवश्यक हो तो प्रशिक्षण के एजेंडे में भी परिवर्तन किया जा सकता है



सत्र 2

गतिविधि 2.1 : 'सोशियो ग्रामिंग'

(45 मिनट)

उद्देश्य: • समूह के बारे में जानकारी हासिल करना।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

सभी प्रतिभागियों को नीचे दी गई श्रेणियों के अनुसार समूह बनाने के लिए कहें:

- पहचान
- राज्य
- भाषा
- वैवाहिक स्थिति (विवाहित, अविवाहित, एकल, तलाकशुदा आदि)
- धर्म – जिसमें आप पैदा हुई हैं
- धर्म – जिसमें आप विश्वास करती हैं
- नारीवादी

चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या वैवाहिक स्थिति महत्वपूर्ण होती है?
- पैदा होने वाले धर्म और विश्वास रखने वाले धर्म में क्या अंतर है?
- क्या नास्तिकों को समाज अलग दृष्टि से देखता है?



- क्या इन गुटों में जाना आसान था?
- कहाँ कहाँ पर प्रतिभागियों को तुरंत निर्णय लेने में कठिनाई महसूस हुई?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

इस अभ्यास से आपको समूह में मौजूद प्रतिभागियों की विविधताएं, समझ का स्तर, भाषा, सीखने की इच्छा व क्षमता, कौन कम बोलता, उनकी सोच इत्यादि के बारे में पता चल सकेगा, जिससे आप अपने कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं। इससे सभी को बोलने का मौका मिलता है और प्रतिभागियों को भी अपने साथियों की व्यक्तिगत जानकारी मिल जाती है जिससे वे उन्हें बेहतर जान पाते हैं। इस अभ्यास से समूह के बारे में कुछ इस प्रकार की जानकारी सामने आ सकती है :

- किस प्रकार का समूह है (जैसे नारीवादी समूह है)
- किस धर्म में विश्वास रखते हैं (जैसे धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करने वाले हैं)
- अधिकतर लोग कौन सी भाषा का प्रयोग करते हैं (जैसे हिन्दी भाषी हैं)
- मुख्य कार्य क्या है (जैसे सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

इस प्रक्रिया से ऐसा माहौल पैदा होता है जिसमें सभी प्रतिभागी बिना किसी संकोच के अपने विचार व अनुभवों को बांट सकते हैं, फिर चाहे वे कार्य संबंधित हों या व्यक्तिगत।



गतिविधि 2.2 : हम कौन हैं?

(45 मिनट)

उद्देश्य: • यह देखना कि व्यक्ति अपनी किस पहचान को अधिक महत्व देता है और क्यों।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से अपनी तीन मुख्य पहचानों के बारे में सोचने के लिए कहें (पहचानों के कुछ उदाहरण हो सकते हैं जैसे, महिला, नारीवादी, समाजकर्मी, माँ, बेटी या पत्नी, इंसान, मुस्लिम, दलित, समलैंगिक आदि।)
- अब प्रतिभागियों को एक एक करके पहचान बताने के लिए कहें और उन्हें चार्ट पेपर पर या बोर्ड पर लिखते जाएं।
- प्रतिभागियों से पूछें कि उनके लिए ये पहचानें क्यों महत्वपूर्ण हैं।

चर्चा के लिए प्रश्न

- महिलाओं को यह बताने की क्या आवश्यकता है कि वे महिला हैं?
- क्या महिलाओं के लिए पारिवारिक पहचान अधिक महत्वपूर्ण होती है?
- धार्मिक या यौनिक पहचान क्यों महत्वपूर्ण बन जाती है?
- क्या पहचानें बदली जा सकती हैं?
- क्या हम स्वयं अपनी पहचानों का चुनाव करते हैं या ये समाज द्वारा थोपी जाती हैं?



प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रतिभागियों के जवाबों से आप देखेंगे कि महिलाएं अपने संबंधों को अधिक महत्व देती हैं और इसीलिए माँ, बेटी या पत्नी होना भी उनकी पहचान का हिस्सा होता है। प्रशिक्षक बता सकते हैं कि पुरुषों के साथ इस अभ्यास में आमतौर पर उनकी पहचानें होती हैं : इंसान, डॉक्टर, इंजीनियर, या वकील इत्यादि। पुरुष कभी यह नहीं कहते कि वे पिता, पति या पुत्र हैं। इन जवाबों से पता चलता है कि महिलाओं के लिए परिवार व संबंधों का महत्व अधिक है, जबकि पुरुषों के लिए उनका व्यावसायिक जीवन अधिक मायने रखता है।

कुछ प्रतिभागी धर्म व जाति को भी अपनी प्राथमिक पहचान बताएंगे। इसका कारण यह है कि उनकी इन पहचानों के कारण उन्हें दुख झेलना पड़ा है। एक तरह से ये पहचानें दुखों व कष्टों की परिभाषाएं भी होती हैं। समाज महिला को भूलने नहीं देता कि वह एक महिला है। मुख्यधारा से हटकर यदि वह किसी और धर्म की है तो वह और भी कष्टकारी हो सकता है, क्योंकि उसके साथ अलग तरह का व्यवहार होगा, जिससे हमेशा यह अहसास होता रहे कि उसका धर्म अलग है। दलित, समलैंगिक ये भी ऐसी पहचानें हैं जहाँ मानव अधिकार का उल्लंघन होता है। अपने आप को दलित या समलैंगिक कहलाने से आप अपने को मुख्यधारा से हट कर एक अलग श्रेणी में पाते हैं जो आपके लिए कष्टों का कारण बन जाता है।



सत्र 3

गतिविधि 3.1: जेंडर क्या है?

(30 मिनट)

उद्देश्य: • जेंडर के अर्थ को स्पष्ट करना।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

प्रतिभागियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- ऐसा कौन सा काम है जो केवल महिलाएं कर सकती हैं?
(जवाब हो सकता है बच्चे को जन्म देना, स्तनपान कराना आदि)
- ऐसा कौन सा काम है जो केवल पुरुष कर सकते हैं?
(जवाब हो सकता है गर्भ देना)

चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या खाना बनाने या घर के अन्य काम करने के लिए किसी विशेष शारीरिक गुण की आवश्यकता होती है?
- क्या समाज में महिलाओं और पुरुषों की भूमिका भगवान की देन है?
- क्या महिलाओं का घर में काम करना प्राकृतिक गुण है?
- क्या पुरुषों का कमाना या घर चलाना प्राकृतिक गुण है?



प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रतिभागियों को बताएं कि वर्तमान समय में जेंडर शब्द को सामाजिक संदर्भ में एक व्यापक अर्थ में देखा जाता है। किसी भी मुद्दे पर बात करने के लिए जरूरी है कि उस पर सब की समझ समान हो। जेंडर शब्द का अर्थ महिला व पुरुष की सामाजिक भूमिकाओं से है। समाज द्वारा निर्धारित महिला व पुरुष के काम, उनकी भूमिकाएं, उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए और उनके क्या अधिकार हैं इत्यादि को ही जेंडर कहा जाता है।

बच्चे को जन्म देना या स्तनपान कराना प्राकृतिक या जैविक कार्य है। इसलिए कोई भी कार्य जिसके लिए बच्चेदानी, वक्षस्थल या लिंग की जरूरत नहीं है उसे स्त्री व पुरुष दोनों कर सकते हैं।

“जेन्डर का अभिप्रायः पुरुषों तथा महिलाओं की भूमिकाओं तथा आचरणों के बारे में सामाजिक अपेक्षाओं से है। जेंडर की परिभाषा पुरुष और महिला की भूमिकाओं, महिला-पुरुष संबंधों तथा आचरणों के जैविक व सामाजिक स्वरूप में अंतर करती है। जेंडर संबंध समय के साथ परिवर्तनशील होते हैं, भले ही इनका निर्धारण दोनों लिंगों के बीच जैविक अंतर के कारण हुआ हो।”



गतिविधि 3.2 : जेंडर अनुकूलन

(45 मिनट)

उद्देश्य: • यह स्पष्ट करना कि किस तरह बचपन से ही व्यक्ति का जेंडर अनुकूलन आरंभ हो जाता है।

प्रक्रिया:

प्रतिभागियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- क्या किसी नवजात शिशु के जननांग देखे बिना यह बताया जा सकता है कि वह लड़की है या लड़का?
- प्रतिभागियों से कहें कि एक मध्यमवर्गीय परिवार में एक 7 वर्षीय बच्चे का जन्मदिन मनाया जा रहा है और उसी की उम्र के अन्य बच्चों को बुलाया गया है। अब उनसे यह बताने के लिए कहें कि क्या इनमें लड़कियों और लड़कों को पहचाना जा सकता है?
- प्रतिभागियों से लड़कियों और लड़कों के पहचान चिन्ह बताने के लिए कहें। पहचान के प्रस्तावित चिन्ह निम्नलिखित हो सकते हैं :

• कपड़े	• जूते	• श्रृंगार	• बाल
• आचार व्यवहार	• खिलौने	• भाषा	• मनोवृत्ति

चर्चा के लिए प्रश्न

- लड़कियों के बाल लम्बे क्यों होने चाहिए?
- लड़कियां नाजुक और लड़के शक्तिशाली क्यों होते हैं?
- लड़के गुड़ियों से क्यों नहीं खेलते?



- क्या लड़कियां लड़कों से कमजोर होती हैं?
- क्या लड़कों का रोना कमजोरी की निशानी है?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रशिक्षक बताएं कि लगभग बारह वर्ष की आयु तक लड़कियों और लड़कों में जननांगों के अतिरिक्त सभी बातें एक समान होती हैं। लेकिन पहचानों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि लड़कियों के कपड़े, जूते, व आचार-व्यवहार ऐसे होंगे जो उनकी गतिशीलता को कम करेंगे और लड़कों के ऐसे जिसमें उन्हें कोई परेशानी न हो। खिलौने भी ऐसे होंगे कि लड़कियां गुड़ियों व घर के सामान से खेलेगीं तो लड़कों के पास होगा जहाज, टैंक या डॉक्टर का किट। खेल में ही बच्चे अपने भविष्य की भूमिकाओं को सीखते व समझते हैं। लड़के गालियां देंगे और लड़कियां दबी आवाज में बोलेंगी या हँसेंगी और लड़के हक से चीज मांगेंगे जबकि लड़कियां चीज लेने से पहले इजाजत मांगेंगीं।

इस प्रकार देखा जाता है कि लड़कियों के जीवन का लक्ष्य होता है सुंदर व सुशील बनना और कार्यक्षमता से उनका कोई लेना देना नहीं है। सौंदर्य के नाम पर उनके ऊपर अनेक बंधन लगा दिए जाते हैं। परंतु लड़कों के लिए गतिशीलता, कार्यक्षमता व शारारिक मजबूती जरूरी होती है क्योंकि बड़े होकर परिवार की जिम्मेदारी उन्हें ही उठानी होती है। इस प्रकार बचपन से ही लड़की व लड़के को उनकी जेंडर भूमिकाएं पता चल जाती हैं।



गतिविधि 3.3: जेंडर व सेक्स में अंतर (30 मिनट)

- उद्देश्य:**
- जेंडर व सेक्स के बीच के अंतर को स्पष्ट करना।
 - यह सिद्ध करना कि महिला और पुरुष के रूप में हमारी भूमिकाएं सिखाई जाती हैं और इसलिए उन्हें चुनौती दी सकती है।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को बताएं कि वर्तमान समय में जेंडर एक सामाजिक अर्थ वाला शब्द है परंतु अक्सर जेंडर व सेक्स की अवधारणाओं में दुविधा पैदा हो जाती है।
- निम्नलिखित तालिका को चार्टपेपर पर बड़ा बड़ा लिखें और अंतरों के द्वारा उसे स्पष्ट रूप से समझाएं।

जेंडर	सेक्स
जेंडर सामाजिक परिभाषा व पहचान है। जेंडर सामाजिक, सांस्कृतिक है और इसे मनुष्य ने बनाया है।	सेक्स जैविक या शारीरिक है।
जेंडर समाज द्वारा बनाया गया है इसलिए यह परिवर्तनशील है। विभिन्न संस्कृतियों या एक परिवार से दूसरे में भी इसका रूप बदल सकता है।	विश्व में हर जगह महिला व पुरुष के शारीरिक अंग एक जैसे ही होते हैं।
जेंडर को बदला जा सकता है।	चिकित्सा विज्ञान की सहायता से सेक्स में परिवर्तन कराना संभव है।

चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या जेंडर प्राकृतिक है?
- क्या जेंडर भूमिकाएं परिवर्तनशील हैं?
- जेंडर भूमिकाओं में परिवर्तन लाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?
- क्या सेक्स को बदला जा सकता है?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

ऊपर तालिका में दिखाए गए अंतरों को और अधिक स्पष्ट करने के लिए प्रतिभागियों से पूछें कि कौन से कार्य महिलाएं और कौन से कार्य पुरुष करते हैं। उदाहरण के लिए खाना बनाना, कपड़े धोना, बच्चों की देखभाल करना आदि – इन्हें अक्सर महिलाओं का काम समझा जाता है, यह जेंडर है। क्योंकि समाज ने महिलाओं की यह भूमिका निर्धारित की है। इसी प्रकार बच्चे को जन्म देना और स्तनपान कराना प्राकृतिक कार्य है अर्थात् यह सेक्स की विशेषता है क्योंकि पुरुष बच्चे को जन्म नहीं दे सकते और न ही स्तनपान करा सकते हैं। इसके बाद स्पष्ट करें कि कोई भी कार्य जिसके लिए महिला या पुरुष के प्रजनन या यौनिक अंगों की आवश्यकता नहीं होती उन्हें महिला तथा पुरुष दोनों ही कर सकते हैं।

जेंडर शब्द किस लिए?

इस नए शब्द का उदय क्यों हुआ? इसके कई कारण हो सकते हैं – उत्पीड़न अधिक हो गया है; स्पष्ट समझ के लिए; क्योंकि महिलाओं को कमजोर समझा जाता है; या भेदभाव को रोकने के लिए इत्यादि। परंतु क्या वाकई महिलाएं अपनी शारीरिक बनावट के कारण कमजोर हैं? और यदि ऐसा है, तो इसे बदला नहीं जा सकता, क्योंकि शारीरिक रचना प्राकृतिक है और इसलिए स्थाई है। प्रकृति ने महिला व पुरुष में भेद किया है पर भेदभाव नहीं किया है।



जेंडर के बारे में बात करने की क्या आवश्यकता है? जहाँ भेदभाव होता है, अधिकारों का हनन होता है वहाँ अधिकार स्थापित करना पड़ता है, और उसके लिए आवाज उठानी पड़ती है। जेंडर शब्द को लाया गया ताकि व्यक्ति समाज को पहचान सके और इसके लिए सामाजिक ढाँचे को समझना जरूरी है। महिलाओं की खराब स्थिति का कारण समाज है प्रकृति नहीं, इसलिए जेंडर एक तुलनात्मक अध्ययन है और यह सत्ता से जुड़ा हुआ है। महिलाओं को जो कष्ट हैं वे प्राकृतिक नहीं बल्कि सामाजिक हैं, मनुष्य द्वारा बनाए गए हैं इसलिए इन्हें बदला जा सकता है।

गतिविधि 3.4: जेंडर भेदभाव

(45 मिनट)

उद्देश्य: • व्यक्तिगत जीवन में जेंडर भेदभाव की पहचान करना।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बांट दें और उनसे निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार-विमर्श कर जवाब देने के लिए कहें।

• परिवार में जेंडर का क्या रूप था?

प्रस्तावित उत्तर हो सकते हैं:

- पिता कमाते थे, घर के मुखिया व अंतिम निर्णयकर्ता भी वही थे
- अधिक बेटियां पैदा करने के लिए माँ को प्रताड़ित किया जाता था
- छोटा भाई आदेश देता था
- खाने पीने में भेदभाव था
- शिक्षा में भेदभाव था



• कब महसूस हुआ कि आप एक लड़की हैं?

प्रस्तावित उत्तर हो सकते हैं:

- माहवारी शुरू होने पर
- आने जाने, खेलने पर रोक टोक लगने पर
- कपड़ों पर पाबंदी, दुपट्टा या ओढ़नी पहनने पर
- लड़कों द्वारा छेड़छाड़
- लड़कों के प्रति आकर्षण
- कक्षा में अलग बैठना
- बाहर अकेले आने जाने पर पाबंदी

• लड़की होने के नाते सबसे कटु अनुभव क्या था?

प्रस्तावित उत्तर हो सकते हैं:

- उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना
- निर्णय लेने या अपनी बात कह पाने की स्वतंत्रता नहीं थी
- रात को देर से घर आने पर पाबंदी, परंतु माता-पिता की सुविधा के अनुसार उसमें छूट थी
- अपने शरीर पर अधिकार नहीं था
- पुरुषों द्वारा छेड़छाड़

• लड़की होने के नाते सबसे आनंदमय अनुभव क्या था?

प्रस्तावित उत्तर हो सकते हैं:

- शादी होने पर (क्योंकि एक तरह की स्वतंत्रता मिली)
- माँ बनने पर
- सजने संवरने का मौका मिला
- लड़की होने के बावजूद घर की जिम्मेदारी उठाने पर



चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या स्वयं हम भेदभाव करते हैं?
- इन भेदभावों को कैसे समाप्त किया जा सकता है?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

जेंडर भेदभाव की बात करते ही अक्सर महिलाओं की ओर ध्यान जाता है परंतु हमें पुरुषों की स्थिति को भी देखना चाहिए। क्योंकि देखने में चाहे सब कुछ पुरुषों पक्ष में ही दिखाई देता है, पर वास्तव में कई स्तरों पर वे भी प्रताड़ित होते हैं। बचपन से ही पुरुषों से कहा जाता है कि वे रो नहीं सकते क्योंकि रोना कमजोरी की निशानी है, इस तरह उन्हें भावनाओं को व्यक्त करने से रोक दिया जाता है। लड़कों को अच्छी शिक्षा जरूर मिलती है पर उसके साथ ही कमा कर घर चलाने का बोझ भी मिलता है। अगर वो नर्तक बनना चाहें तो नहीं बन सकते क्योंकि उन्हें डॉक्टर या इंजीनियर ही बनना होगा, तो ऐसी स्थिति में उनकी भी इच्छाओं व अधिकारों का हनन होता है।

पुरुष महिलाओं के संरक्षक होते हैं चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो। छोटा भाई भी अपने आप को बड़ी बहन का संरक्षक समझता है। सुरक्षा व नियंत्रण के बीच बहुत बारीक अंतर होता है और रक्षा करते करते रक्षक नियंत्रक बन बैठते हैं। पुरुषों को 5 से 50 वर्ष की आयु तक महिलाओं का बोझ उठाना पड़ता है उनकी रक्षा, विवाह और देखभाल की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। महिलाएं जब अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी पुरुषों को सौंप देती हैं तो इसका अर्थ है कि उन्होंने मान लिया है कि वे पुरुषों से कमतर, निर्बल और लाचार हैं। इसलिए पुरुषों को बचपन से ही यह अहसास दिलाया जाता है कि वे घर के मुखिया हैं और उनकी बात सुनी जाएगी।

ऊपरी अभ्यास से जो बातें उभर कर आएंगी उनसे यह स्पष्ट होगा है कि यह भेदभाव एक सामाजिक व्यवस्था के कारण है। हम यहाँ एक सामाजिक व्यवस्था की बात कर रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि समाज में सबसे सुरक्षित स्थान परिवार होता है, पर ऊपर लिखे बिन्दुओं से साफ पता चलता है कि सबसे पहले सारी बंदिशें परिवार ही लगाता है और सबसे ज्यादा दुख परिवार वालों से ही मिलता है। ये महिला-पुरुष के भेद, उनकी भूमिकाएं, अधिकार आदि प्रकृति की देन नहीं हैं बल्कि समाज की इस व्यवस्था का परिणाम हैं और यह व्यवस्था है "पितृसत्ता"।

महिला आंदोलन ने अभी तक केवल महिलाओं के बारे में ही सोचा है। अब यह समझने का समय आ गया है कि पुरुषत्व भी जेंडर की देन है प्रकृति की नहीं। पुरुषों के पास अधिक अधिकार तो हैं परंतु ये अधिकार महिलाओं ने ही उन्हें दिए हैं। पुरुषों को बचपन से सिखाया जाता है कि वे आदेश दे सकते हैं और उनके आदेशों का पालन भी किया जाएगा।

पितृसत्ता ने दुनिया को दो भागों में विभाजित कर दिया है – निजी और सार्वजनिक। इस विभाजन के चलते महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में से पूर्णतयः काट दिया गया है। इसे स्पष्ट रूप से समझाने के लिए आप प्रतिभागियों को नीचे दिए गए उदाहरणों की सहायता से बता सकते हैं कि किस प्रकार सभी क्षेत्रों में जेंडर के आधार पर महिला व पुरुष में भेदभाव किया जाता है। यह ध्यान रखें कि निम्नलिखित बातें चर्चा में जरूर सामने आएँ।



स्थानों में जेंडर

महिला	पुरुष
रसोईघर पनघट	पान, शराब, या गोश्त की दुकान चौपाल देर रात फिल्म देखने जाना मस्जिद में जाना

इन स्थानों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं घर में रहेगीं और पुरुष बाहर जाएंगे।

नौकरी व कार्य में जेंडर

महिला	पुरुष
नर्स टीचर आया सेक्रेटरी रिसेप्शनिस्ट विमान परिचारिका	डॉक्टर इंजीनियर जज / वकील पुलिस ड्राइवर विमानचालक

संपूर्ण विश्व में केवल 14 प्रतिशत महिलाएं कार्यकारी या प्रबंधक पदों पर हैं। इस सूची से हम देख सकते हैं कि सेवा से संबंधित कार्य महिलाओं के हैं और निर्णायक व महत्वपूर्ण कार्य पुरुषों के हैं।



वस्तुओं में जेंडर

महिला	पुरुष
छोटी घड़ी छोटा रुमाल छोटे रंगीन बैग	बड़ी घड़ी बड़ा रुमाल कामकाजी ब्रीफकेस

मर्दाना वस्तुएं बड़ी और ज़नाना वस्तुएं छोटी होती हैं।

भाषा में जेंडर

महिला	पुरुष
कटोरी कुरती घड़ी टोकरी	कटोरा कुरता घड़ियाल टोकरा

हर बड़ी चीज का संबोधन मर्दाना है और छोटी चीज का ज़नाना। वस्तुओं के साथ साथ यह अंतर भाषा में भी स्पष्ट है।

संसाधनों में जेंडर

संसाधनों का भी जेंडरीकरण होता है। उच्चशिक्षा, गाड़ियां व अच्छे भोजन पर पुरुषों का अधिकार होता है। घर में यदि स्कूटर हो तो लड़का उसे चलाएगा लड़की नहीं।

प्रतिभागियों को स्पष्ट करें कि इन सभी भेदों से यह स्पष्ट होता है कि समाज हमेशा यह याद दिलाता रहता है कि पुरुष उत्तम है और महिलाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।



गतिविधि 3.5: जेंडर संबंध

(40 मिनट)

उद्देश्य: • व्यक्तिगत जीवन में जेंडर संबंधों की पहचान करना।

- संबंधों में सत्ता के समीकरणों को स्पष्ट करना।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से कुछ ऐसे संबंध बताने के लिए कहें जहाँ जेंडर का भेद दिखाई देता है।
- सभी प्रतिभागियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रतिभागियों के जवाबों को एक चार्ट पेपर या बोर्ड पर लिखते जाएं।
- संबंधों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं –
 - पति – पत्नी का संबंध
 - समधियों का संबंध
 - पति का भाई – पत्नी का भाई
 - बेटे की माँ – बेटी की माँ



चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या संबंधों में सत्ता होती है?
- क्या सत्ता सदैव नकारात्मक होती है?
- क्या पुरुष का पलड़ा हमेशा भारी होता है?
- क्या संस्कृति, जाति, धर्म आदि से संबंधों की सत्ता में प्रभाव पड़ता है?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रतिभागियों के जवाबों से ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि संबंध भी जेंडर की मार से अछूते नहीं हैं, जेंडर संबंधों को भी प्रभावित करता है। संबंधों की सूची से आप दिखा सकते हैं कि सभी रिश्तों में ऊँच-नीच होती है। पत्नी का भाई व बेटी की माँ, क्योंकि दोनों रिश्ते महिला से संबंधित हैं उनका स्थान समाज में नीचा है। जेंडर संबंध सत्तात्मक होते हैं। वास्तव में दो लोगों के बीच किसी भी प्रकार का संबंध सत्तात्मक होता है। जब दो लोग होते हैं तो संसाधनों पर प्रभाव पड़ता है, काम का बंटवारा होता है और निर्णय लेने पड़ते हैं, ऐसे में सत्ता होना स्वाभाविक है। सत्ता अपने आप में नकारात्मक नहीं होती है। हर संबंध में सत्ता होती है परंतु इसे बराबर भी बांटा जा सकता है।

जेंडर श्रम विभाजन

श्रम का विभाजन भी जेंडर पर आधारित होता है। श्रम को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—



उत्पादन – ऐसे कार्य जिनसे पैसे मिलते हैं। दफ्तरों, कारखानों व खेतों का काम इसी श्रेणी में आता है। ये आर्थिक गतिविधियों में शामिल किए जाते हैं। ये कार्य महिला व पुरुष दोनों करते हैं पर प्राथमिकता पुरुषों को दी जाती है क्योंकि इनमें कौशल की आवश्यकता होती है। पितृसत्तात्मक सोच में पुरुषों को घर का मुखिया व रोजी रोटी कमाने वाला माना जाता है इसलिए उत्पादन गतिविधियों में महिलाओं को कम महत्व और कम कीमत दी जाती है।

पुनरुत्पादन – यह कार्य दो तरह के होते हैं – एक जैविक और दूसरा सामाजिक। जैविक पुनरुत्पादन है प्रजनन या नए मानवों को जन्म देना, यह कार्य केवल महिलाएं कर सकती हैं। सामाजिक पुनरुत्पादन में ऐसे कार्य हैं जिनके बगैर मनुष्य का जीना मुश्किल होता है और जिसके लिए कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ते अर्थात् संभालने या पालने का कार्य। इसमें घर संभालना, परिवार के सदस्यों को पालना, खाना बनाना, सफाई करना व बीमारों की देखभाल करना आदि कार्य शामिल हैं। ये कार्य जीवन के लिए अतिमहत्वपूर्ण हैं पर इन्हें आर्थिक गतिविधियों में शामिल नहीं किया जाता इसलिए ये अदृश्य, अवैतनिक और महत्वहीन लगते हैं। ये कार्य भी महिलाओं द्वारा किए जाते हैं।

सामुदायिक कार्य – ये ऐसे कार्य हैं जो समाज को अच्छी तरह चलाने और संगठित रखने के लिए जरूरी हैं और इनके द्वारा हम समाज का हिस्सा बनते हैं। जैसे राजनैतिक कार्य, जाति पंचायत, धार्मिक गतिविधियां, त्यौहार मनाना, बीमार से अस्पताल में मिलने जाना, किसी के मरने में जाना, शादी में जाना, जन्मदिन पर जाना इत्यादि। ये कार्य महिला व पुरुष दोनों करते हैं परंतु रिवाजों के अनुसार कुछ कार्य पुरुषों के होते हैं कुछ महिलाओं के। जैसे जाति पंचायत या कब्रिस्तान में महिलाएं नहीं जाती और शादी, जन्मदिन या घर के अंदर होने वाले कार्य महिलाएं करती हैं।



जेंडर श्रम विभाजन में कम क्षमता और कम मजदूरी वाले कार्य महिलाओं के जिम्मे आते हैं। आईएलओ (ILO)¹ के आँकड़ों के अनुसार विश्व में होने वाले 66 प्रतिशत कार्य महिलाएं करती हैं पर आय का 10 प्रतिशत महिलाओं को मिलता है और केवल 1 प्रतिशत संपत्तियों पर महिलाओं का अधिकार है। तो महिलाएं आयहीन, संपत्तिहीन और इसलिए मानहीन हैं। जेंडर श्रम विभाजन से जेंडर क्षमता विभाजन का जन्म होता है और उससे फिर संसाधनों का जेंडर विभाजन होता है।

1. इंटरनेशनल लेबर ऑरगेनाइजेशन



पितृसत्ता

सत्र 4

4.1 जाति व्यवस्था के संदर्भ को स्थापित करना

4.2 पितृसत्ता की व्यवस्था क्या है और किस प्रकार कार्य करती है?

4.3 महिलाएं पितृसत्ता को सहयोग क्यों देती हैं?

4.4 नारीवाद क्या है?



सत्र 4

4.1: जाति व्यवस्था के संदर्भ को स्थापित करना

(30 मिनट)

उद्देश्य: • यह देखने का प्रयास करना कि जाति व्यवस्था किस प्रकार लोगों को प्रभावित करती है।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को दो समूहों में बांट दें।
- उन्हें अपने अपने समूह में चर्चा द्वारा सोच कर बताने के लिए कहें कि उनके अनुसार निम्न या दलित वर्ग को किस प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा जाता है। कुछ प्रस्तावित अधिकार निम्नलिखित हो सकते हैं।
 - मान सम्मान
 - शिक्षा
 - पूजा करने व मंदिरों में जाने की मनाही
 - छुआछूत
 - उन्हें अपवित्र माना जाना
 - उनका दलन व शोषण होना
 - उन्हें गंदे कार्य करने पड़ते हैं
 - काम की बहुत कम कीमत मिलती है
 - उनके पास अधिक संपत्ति नहीं होती



- चर्चा के बाद दोनों समूहों से एक एक प्रतिभागी बड़े समूह के सामने प्रस्तुतीकरण करे।
- प्रतिभागियों के बिन्दुओं को बोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखते जाएं।

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रशिक्षक प्रतिभागियों को बताएं कि हमारे देश में जाति व्यवस्था बहुत मज़बूत है और आज के आधुनिक युग में भी यह हमारे समाज में व्यापक रूप से प्रचलित है। हिंदू धर्म में दलित वर्ग जाति व्यवस्था के सबसे आखिरी पायदान पर है जिसके कारण उन्हें कई चीजों से वंचित रहना पड़ता है। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि समाज में महिलाओं को भी ऊपरलिखित सब अधिकार प्राप्त नहीं हैं और यह बात सभी वर्ग व जाति की महिलाओं पर लागू होती है। परंतु मध्यवर्गीय महिलाओं पर इसकी दोहरी मार पड़ती है। कह सकते हैं कि समाज में महिलाओं की स्थिति भी निम्न वर्ग के समान ही है।



4.2: पितृसत्ता की व्यवस्था क्या है और किस प्रकार कार्य करती है?²

(45 मिनट)

- उद्देश्य:
- पितृसत्ता के बारे में प्रतिभागियों की सोच को अधिक स्पष्ट करना।
 - यह जानना कि पितृसत्ता व्यवस्था क्या है और यह किस प्रकार से कार्य करती है?

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से पूछें कि उनके विचार से पितृसत्ता क्या है।
- सभी प्रतिभागियों को प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रतिभागियों के जवाबों को बोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखते जाएं।

चर्चा के लिए प्रश्न

- क्या हम सब भी इस व्यवस्था के शिकार हैं?
- क्या पितृसत्ता महिला व पुरुष दोनों को समान रूप से प्रभावित करती है?
- क्या यह व्यवस्था बदली जा सकती है?
- क्या वास्तव में औरत औरत की दुश्मन होती है?

2. पितृसत्ता का इतिहास – परिशिष्ट 2



प्रशिक्षक के लिए सुझाव

प्रतिभागियों को बताएं कि पितृसत्ता जेंडर असमानता की जड़ है। पितृसत्ता का अर्थ है “पुरुष की सत्ता”। यह एक सामाजिक व्यवस्था है जिसमें पुरुष को उत्तम माना जाता है। इस व्यवस्था में निर्णय व संसाधनों पर पुरुषों का नियंत्रण अधिक होता है। नियंत्रण को निम्नलिखित श्रेणियों में बांट कर देखा और समझा जा सकता है कि इनसे पुरुष किस प्रकार लाभांवित होते हैं।

उत्पादन या श्रम शक्ति – घर के कामों के लिए महिलाओं को कोई वेतन नहीं मिलता और बाहर काम करने पर भी पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। ऊँचे पदों से उन्हें दूर रखा जाता है। इस प्रकार आय पर पुरुषों का नियंत्रण होता है। महिलाओं का शोषण होता रहता है जिसका भौतिक लाभ पुरुषों को मिलता है।

पुनरुत्पादन या प्रजनन शक्ति – शादी होगी या नहीं, कब व किसके साथ होगी, बच्चे होंगे या नहीं और होंगे तो कब व कितने – ये सभी बातें पुरुष तय करते हैं। गर्भनिरोधकों का प्रयोग महिलाओं के लिए है (अधिकतर), पुरुषों के लिए यह ना के बराबर है। गर्भनिरोध की जिम्मेदारी महिलाओं की होती है।

यौनिकता – महिलाओं की यौनिकता पर भी पुरुषों का नियंत्रण होता है। लगभग सभी धर्मों में शादी के संबंध के बाहर महिलाओं की यौनिकता के लिए कोई जगह नहीं है। ऐसा माना जाता है कि महिलाओं को पुरुषों की इच्छा व जरूरत के अनुसार यौनिक सुख देना चाहिए³। समाज के नियम व कानून महिलाओं की पोशाक, संबंधों आदि पर नियंत्रण रखते हैं।

3. हमारे देश में शादी के रिश्ते में बलात्कार / वैवाहिक बलात्कार से संबंधित कोई कानून नहीं है।



गतिशीलता – पर्दा प्रथा, घर के अंदर रहना, महिला व पुरुष के बीच कम से कम संपर्क होना इन सब बातों के द्वारा महिलाओं की गतिशीलता पर नियंत्रण रखा जाता है।

संसाधनों पर नियंत्रण – संपत्ति पिता के बाद पुत्र को मिलती है। जहाँ महिलाओं को कानूनी उत्तराधिकार का हक मिला है वहाँ भी सामाजिक परम्पराओं, भावनात्मक दबाव और रिश्तों की राजनीति से उन्हें इस अधिकार से वंचित कर दिया जाता है। सभी आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं पर अधिकतर पुरुषों का नियंत्रण होता है।

परिवार – जो समाज की बुनियादी इकाई है, वह सबसे अधिक पितृसत्तात्मक संस्था है। पुरुष घर का मुखिया होता है और घर के सभी छोटे बड़े सदस्यों पर नियंत्रण रखता है।

धर्म – पहले स्त्री शक्ति की पूजा की जाती थी परंतु धीरे धीरे इसका अंत हो गया और देवियों की जगह देवताओं ने ले ली। अधिकांश धर्मों को उच्च वर्ग व उच्च जाति के पुरुषों ने बनाया है। नैतिकता, व्यवहार आदि के नियम तय कर उन्होंने ही महिलाओं व पुरुषों की जिम्मेदारियां व अधिकार निश्चित किए हैं। समाज में धर्म का एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह एक बड़ी ताकत होती है।

शिक्षा – अधिकतर किताबें पुरुषों द्वारा लिखीं गई हैं और इसलिए उनके नजरिए को पेश करती हैं जिसमें महिलाओं का दर्जा हमेशा पुरुषों से नीचा ही होता है।

न्याय, स्वास्थ्य, आर्थिक, राजनैतिक, संचार, प्रशासन और गैर सरकारी संस्थाओं में पुरुषों का ही नियंत्रण है। जज, वकील, डॉक्टर, राजनैतिक नेता, पुलिस, अखबार के संपादक व रिपोर्टर अधिकतर पुरुष ही होते हैं। इन सभी क्षेत्रों को ध्यान से देखें तो



पता चलेगा कि पितृसत्ता में एक विशेष वर्ग के पुरुषों का स्वातंत्र्य होता है और यह है उच्च वर्ग।

पितृसत्ता से पुरुषों को लाभ होते हैं। उन्हें निशुल्क नौकरानी व यौन संबंध प्राप्त होता है। घर के बाहर जाति, वर्ग, वर्ण या किसी भी कारण से सम्मान मिले या न मिले पर अपने परिवार में जरूर मिलता है। पुरुषों का बाहुल्य होने के कारण राजनैतिक क्षेत्र में यू एन या संसद में उन्हें अधिक सीटें मिलती हैं।

जेंडर में शोषित और शोषक का अंतर स्पष्ट नहीं होता। परंतु जब हम पितृसत्ता की व्यवस्था को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष शोषण करता है और महिला का शोषण होता है। विश्व में पाँच प्रमुख सामाजिक व्यवस्थाएँ हैं जो एक ही ढाँचे पर आधारित हैं और एक ही प्रकार से कार्य करती हैं। ये व्यवस्थाएँ हैं –

- पितृसत्ता
- वर्ग व्यवस्था
- जाति व्यवस्था
- वर्ण व्यवस्था
- उत्तरी व दक्षिणी देश (जी 8 वाले देश⁴) या अमीर व गरीब देश

पितृसत्ता, जाति व्यवस्था व वर्ग व्यवस्था एक ही प्रकार से कार्य करती हैं। सभी सामाजिक व्यवस्थाएँ शोषण व हिंसा पर आधारित हैं। जेंडर की लड़ाई महिला-पुरुष की लड़ाई नहीं है, यह एक विचारधारा की लड़ाई है।

4. जी 8 समूह के सदस्य देश हैं कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यूनाइटेड किंगडम तथा संयुक्त राज्य अमरीका। ये सब मिलकर लगभग विश्व के दो तिहाई आर्थिक उत्पादन के जिम्मेदार हैं।



4.3: महिलाएं पितृसत्ता को सहयोग क्यों देती हैं?

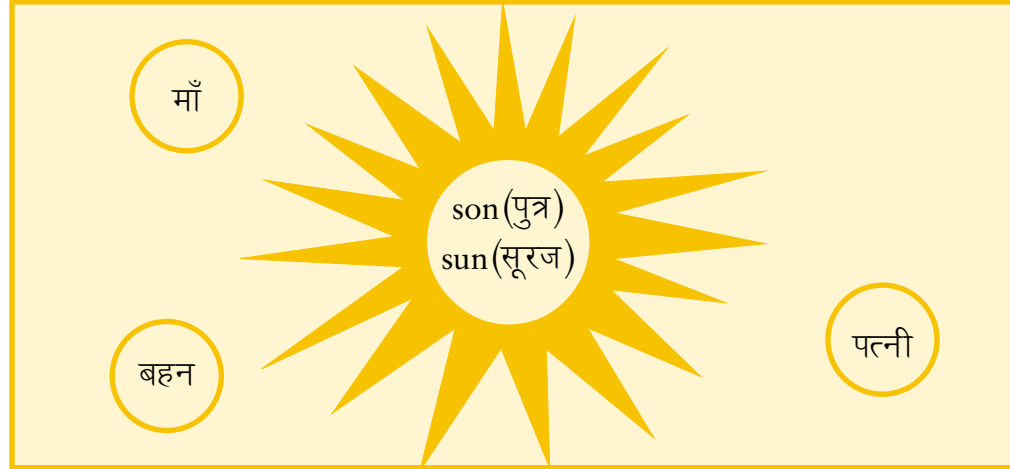
(40 मिनट)

- उद्देश्य:**
- इस वाक्य को समझने का प्रयास करना कि "औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन है"।
 - यह जाँचना कि महिलाएं पितृसत्ता व्यवस्था को क्यों पोषित करती हैं?

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- सभी प्रतिभागियों से पूछें कि क्या उन्हें लगता है कि "औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन है"।
- सभी प्रतिभागियों को प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रतिभागियों से अपने जवाबों का कारण भी बताने के लिए कहें।
- उनके जवाबों को बोर्ड या चार्ट पेपर पर लिखते जाएं।
- अंत में नीचे दिए गए चित्र के द्वारा स्पष्ट करें कि ऐसा क्यों कहा जाता है कि औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन है।



प्रशिक्षक के लिए सुझाव

समझाएं कि जिस प्रकार सूरज के इर्दगिर्द घूमते उपग्रह सूरज से उर्जा प्राप्त करते हैं और उसकी रोशनी से चमकते हैं, ठीक उसी तरह माँ, बहन और पत्नी रूपी उपग्रह पुत्र रूपी सूरज से उर्जा अर्थात् संसाधन प्राप्त करती हैं। शादी से पहले संसाधन केवल माँ और बहन के बीच बंटे होते हैं परंतु पत्नी के आ जाने पर ये तीन लोगों में बंट जाते हैं जिससे संबंधों में कटुता आ जाती है। क्योंकि तीनों की निर्भरता तो उस एक पुरुष पर ही होती है। यह भी एक प्रकार की व्यवस्था है।

पितृसत्ता केवल पुरुषों को प्रभावित नहीं करती, महिलाएं भी पितृसत्तात्मक बन जाती हैं। सदियों से चली आ रही यह सामाजिक व्यवस्था हमारे अंदर बैठ जाती है। इसके कई कारण हैं, जैसे –

- आर्थिक निर्भरता
- समाज द्वारा स्वीकृति मिलना (अच्छी औरत बने रहना)
- असुरक्षा की भावना

- समय के बहाव के साथ बहना क्योंकि विरोध में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है
- महिलाओं में एकता नहीं है वे अलग वर्गों व जातियों में बंटी हुई हैं
- महिलाओं को अपना इतिहास पता नहीं है
- सब महिलाएं किसी न किसी धर्म में पैदा होती हैं और उस पर उँगली उठाना कठिन होता है

4.3: नारीवाद क्या है?

(45 मिनट)

उद्देश्य: • नारीवाद पर प्रतिभागियों की समझ स्पष्ट करना।

सामग्री: चार्ट पेपर, रंगीन पेन, सफेद बोर्ड

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से एक ऐसे व्यक्ति का नाम बताने के लिए कहें जो उनके विचार से नारीवादी हैं।
- साथ ही उनसे यह बताने के लिए भी कहें कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि वे नारीवादी हैं।
- सभी प्रतिभागियों को जवाब देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रतिभागियों के जवाबों को चार्ट पेपर या सफेद बोर्ड पर लिखते जाएं। कुछ संभावित जवाब हो सकते हैं – माँ, पति, अध्यापिका आदि।



प्रशिक्षक के लिए सुझाव

नारीवाद पितृसत्ता का जवाब है। बिना किसी पक्षपात के समानता के लिए संघर्ष करना नारीवाद है। सामान्यतः नारीवादियों की एक नकारात्मक छवि ही हमारे मन में होती है। आमतौर पर ऐसी धारणा होती है कि पुरुषों जैसे कपड़े पहनने वाली, छोटे बालों वाली, घरों को तोड़ने वाली, सिगरेट व शराब पीने वाली, सामाजिक मान्यताओं को तोड़ने वाली या सीधे शब्दों में खराब महिलाएं नारीवादी होती हैं।

प्रतिभागी कई जानेमाने नारीवादियों के नाम लेंगे, माँ, किसी साथी, कोई अपने आप को और कोई अपने पति को नारीवादी बताएगा। प्रशिक्षक स्पष्ट करें कि इन लोगों में से कोई भी ऊपर दी गई परिभाषा से मेल नहीं खाता है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह नकारात्मक नजरिया केवल फैलाई गई धारणा है, वास्तव में ऐसा नहीं है।

अंत में प्रतिभागियों को विचार करने के लिए निम्नलिखित प्रश्न दें।

- पितृसत्ता के संदर्भ में व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकते हैं?
- संस्थागत स्तर पर क्या किया जा सकता है?
- नेटवर्क के स्तर पर क्या किया जा सकता है?



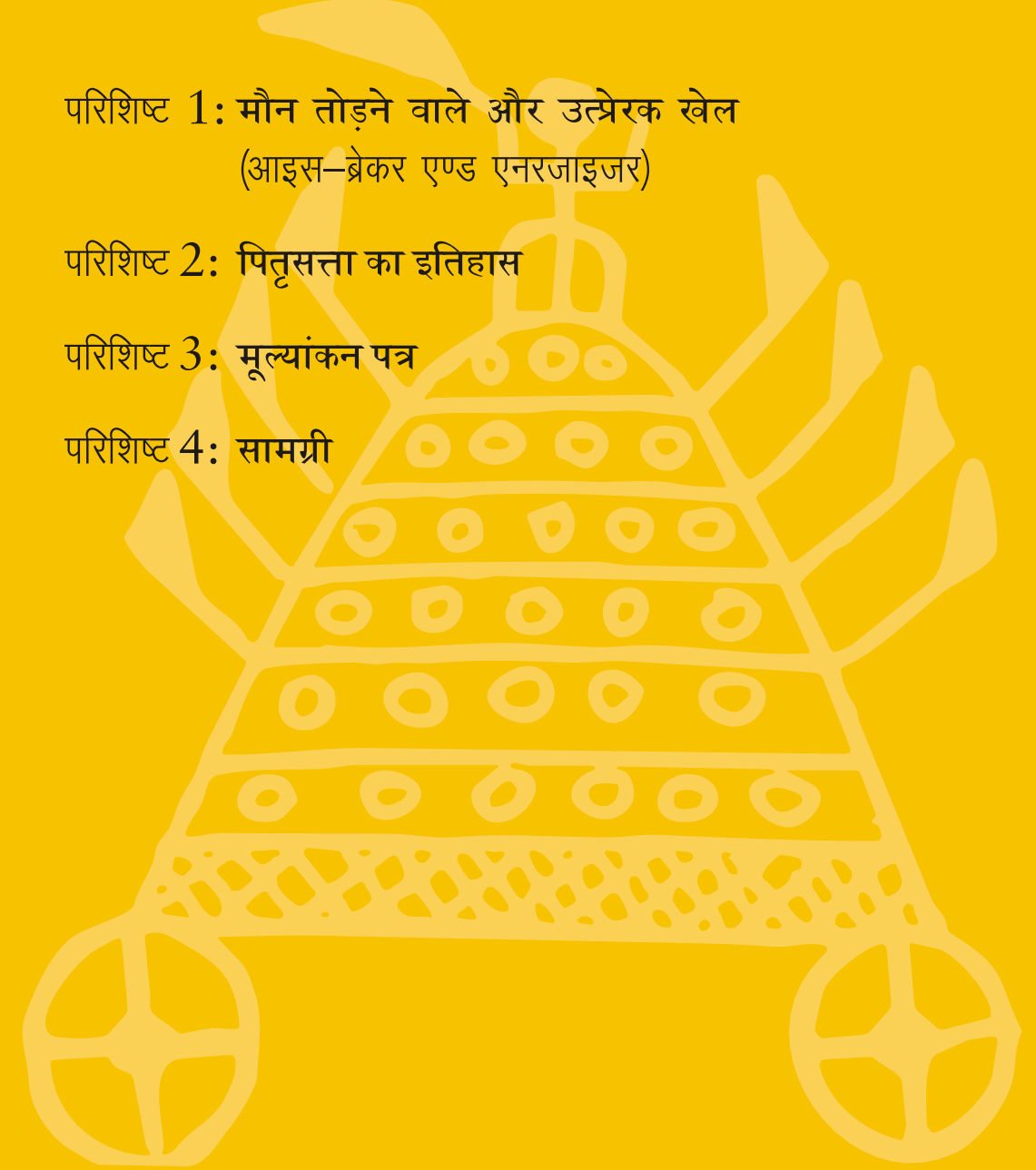
परिशिष्ट

परिशिष्ट 1: मौन तोड़ने वाले और उत्प्रेरक खेल
(आइस-ब्रेकर एण्ड एनरजाइजर)

परिशिष्ट 2: पितृसत्ता का इतिहास

परिशिष्ट 3: मूल्यांकन पत्र

परिशिष्ट 4: सामग्री





परिशिष्ट 1: मौन तोड़ने वाले और उत्प्रेरक खेल (आइस-ब्रेकर एण्ड एनरजाइजर)

हर कार्यशाला में मौन तोड़ने वाले और उत्प्रेरक खेल सुविधाजनक और मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिचय के लिए खेल 1 या 2 का प्रयोग किया जा सकता है।

खेल 1 : प्रतिभागियों को गोलाकार में बैठने को कहें। फिर उनसे उनका नाम और पसंदीदा फल बताने को कहें और साथ ही उस फल और स्वयं में कोई समानता भी बताने के लिए कहें।

उदाहरण : मेरा नाम **मंजुल** है और मुझे **सेब** पसंद है क्योंकि **मेरे गाल सेब की तरह लाल** हैं।

खेल 2 : प्रतिभागियों से अपनी एक खूबी / खामी बताने के साथ अपना नाम बताने को कहें।

उदाहरण : मेरा नाम **सुकुमार सुनीता** है।

प्रशिक्षक को खेल की शुरुआत अपना नाम बता कर करनी चाहिए ताकि प्रतिभागियों को अच्छी तरह समझ आ जाए।



मौन तोड़ने के लिये (आइस-ब्रेकर)

पहला सत्र कार्यशाला के उद्देश्य को स्थापित करने और परिचित होने के लिये बिताना चाहिए। इसे मौन तोड़ने वाले (आइस-ब्रेकर) खेलों के साथ किया जा सकता है, जो शुरुआती सत्र में तनाव और चिंता कम करने और समूह को तुरंत कार्यशाला में जोड़ने की तकनीकें हैं। आयु, परिपक्वता, और समूह के सदस्यों के अनुभवों के आधार पर प्रशिक्षक निम्न में से एक या एक से अधिक खेलों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

भेड़ और भेड़िया :

सभी प्रतिभागियों को खड़े होकर एक गोला बनाने को कहें। फिर उनमें से किसी एक को अपनी मर्जी से भेड़ और एक को भेड़िया बनने के लिए कहें। प्रतिभागी एक दूसरे का हाथ पकड़ कर मजबूत गोला बनाएं और भेड़ गोले के अंदर खड़ी हो। अब भेड़िये को भेड़ पर हमला करना है और भेड़ को अपने आप को बचाना है, चाहे गोले के अंदर रह कर या उससे बाहर जा कर। गोले में खड़े प्रतिभागियों को मजबूती दिखा कर भेड़ की मदद करनी है और भेड़िये को अंदर आने से रोकना है। इसी खेल को दोबारा दूसरे दो लोगों के साथ भी खेला जा सकता है।

क्या तुम्हें याद है?

सभी प्रतिभागियों को गोला बना कर बैठने को कहें। अब एक प्रतिभागी दूसरे प्रतिभागी को अपना नाम बताए। फिर दूसरा प्रतिभागी, तीसरे प्रतिभागी को, पहले प्रतिभागी का और अपना नाम बताए। फिर तीसरा प्रतिभागी, पहले दो के साथ, अपना नाम चौथे को बताए और इस तरह आगे नाम जोड़ कर बताते जाएं। प्रशिक्षण के दूसरे दिन यह खेल काफी अच्छा रहता है।

उदाहरण : मेरा नाम **मंजू** है, मेरा नाम **मंजू प्रिया** है, मेरा नाम **मंजू प्रिया रून्मुन** है.....



मानव श्रृंखला :

समूह को हाथ पकड़ कर गोले में खड़े होने को कहें। अब एक व्यक्ति बंधे हाथों के बीच से निकले और बाकी उसके पीछे पीछे चलें। ज्यादा संभावना है कि वे आपस में उलझ जाएंगे और हाथ छोड़ देंगे या फिर शायद कुछ देर तक खेल चलता रहे।

मैंने सुना तुमने क्या कहा!

समूह को एक गोले में बैठने को कहें। अब एक व्यक्ति कोई एक वाक्य सोच कर दूसरे के कान में कहे। फिर दूसरा, तीसरे के कान में कहे और तीसरा, चौथे के, जब तक कि आखिरी प्रतिभागी न सुन ले यह सिलसिला इसी तरह चलता रहे। इसके बाद आखिरी प्रतिभागी को ऊँची आवाज में वाक्य दोहराने को कहें। सब लोग बिना हँसे नहीं रह पाएंगे क्योंकि मूल वाक्य अब तक कुछ और ही बन गया होगा।

अपनी जगह से न हिलना :

कुल संख्या के हिसाब से प्रतिभागियों को तीन या चार समूहों में बाँट दें। अब हर समूह में से एक व्यक्ति अंदर खड़ा हो जाए और बाकी उस के आस पास घेरा बना लें। अब समूहों को बताएं कि आप उनसे प्रश्न पूछेंगी और उन्हें अपनी जगह से बिना हिले जो दिखाई दे रहा है उसी के मुताबिक उन्हें जवाब देना होगा। इन जवाबों से सभी को हँसी आएगी ये पक्का है। इस खेल से हमें ये सीख मिलती है कि जो हम आँख से देखते हैं, वो पूरा सच नहीं होता। इसलिए हमें दूसरों की आलोचना या उनके बारे में ऐसे ही राय कायम नहीं करनी चाहिए।

मेरा दर्पण :

प्रतिभागियों को दो समूहों में बाँट दें। दोनों समूहों को एक दूसरे के एकदम सामने खड़े रहने को कहें। अब एक समूह को मनचाहा काम करने को कहें, और सामने खड़ा



दूसरा समूह, दर्पण की तरह काम करे और उनकी वैसी ही नकल करे जैसे कि दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। पाँच मिनट बाद समूहों की भूमिकाएं बदल दें।

पकपक, चकचक

समूह को एक गोले में बैठने को कहें। अब बताएं कि आप को दो चिड़ियां अच्छी लगती हैं, एक का नाम है पकपक और दूसरी का चकचक। उनसे कहें कि जब आप पकपक बोलें तो वो अपने पंजों पर खड़े होकर कोहनियों को पंखों की तरह हिलाएं और जब आप चकचक बोलें तो कोई न हिले। जो गलती करता जाएगा वो गोले से बाहर होता जाएगा। अब देखिए मज़ा तो सब लोगों पर आखिर तक कौन बचता है!

प्रतिभागियों को बांटने के रुचिकर तरीके :

प्रतिभागियों को दो या उससे अधिक समूहों में बांटने के लिए प्रशिक्षक नए व रुचिकर तरीके अपना सकते हैं। एक तरीका हो सकता है कि एक, दो और तीन की गिनती कर के प्रतिभागियों को पुकारें और फिर सब एक नम्बर एक तरफ, दो नम्बर दूसरी और तीन नम्बर तीसरी तरफ हो जाए, इस तरह तीन समूह बन जाएंगे।

प्रशिक्षक नए खेल भी बना सकते हैं या फिर ऊपर बताए खेलों के तरीकों को बदल कर उन्हें और रुचिकर भी बना सकते हैं।



परिशिष्ट 2: पितृसत्ता का इतिहास

एन्गल्स ने अपनी पुस्तक 'ओरिजन ऑफ़ द फेमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टी एण्ड द स्टेट' में पितृसत्ता की शुरुआत के बारे बताया है। उनका विश्वास था कि महिलाओं की अधीनता की शुरुआत व्यक्तिगत सम्पत्ति के आरंभ के साथ हुई। उनका कहना है कि वर्ग विभाजन और महिलाओं की अधीनता एक ऐतिहासिक तथ्य है। पहले वर्ग और लिंग के आधार पर कोई विभाजन नहीं था। उन्होंने समाज के तीन चरणों की बात कही है।

पाशविकता काल – इस काल में मनुष्य जानवर की तरह रहता था। वह शिकार करता और भोजन एकत्र करता था। उस समय न विवाह था और न ही सम्पत्ति की धारणा। पुरुषों को यह नहीं पता था कि बच्चे के जन्म में उनका भी कोई योगदान है।

बर्बरता काल – इस काल में मनुष्य ने जानवरों पर काबू किया, आग का प्रयोग शुरू हुआ और हथियार बने। पुरुष शिकार के लिए बाहर जाते और महिलाएं पीछे घर संभलती और कृषि करती थीं। लोग बड़े कबीलों में रहते थे पर विवाह की धारणा तब भी नहीं थी। एक कबीले के अंदर नहीं पर एक कबीले का दूसरे कबीले के साथ झगड़ा होने लगा था। हथियारों व शक्ति के बल पर दास बनने लगे थे। दास महिला व पुरुष दोनों होते थे। मनुष्य ने जानवरों व दासों के रूप में सम्पत्ति इकट्ठी करनी शुरू की और तब निजी सम्पत्ति की धारणा का विकास हुआ। जिस प्रकार मनुष्य ने प्रकृति को दबाया है उसी प्रकार पुरुषों ने महिलाओं को दबाया है।

पुरुष चाहते थे कि उनकी सम्पत्ति उनके बच्चों को मिले। उनके बच्चे कौन से हैं यह जानने के लिए यह जरूरी था कि महिला के संबंध केवल एक पुरुष के साथ ही हों। एन्गल्स के अनुसार यह 'माँ के अधिकार की ये सबसे बड़ी हार थी'। पिता के अधिकार को स्थापित करने के लिए महिलाओं के आने जाने पर बंधन लगा दिए गए और उन पर एक-विवाही संबंध लाद दिए गए।

सभ्यता – एन्गल्स के अनुसार महिलाओं को चारदीवारी में बंद कर दिया गया ताकि वे उत्तराधिकारी पैदा कर सकें और उनमें कोई मिलावट न हो। महिलाओं का एकल रिश्ता था पर पुरुष अन्य संबंध बनाने के लिए आजाद था। एन्गल्स के अनुसार यौनकर्मियों की शुरुआत उसी दिन से हो गई थी। उनके अनुसार मज़दूर वर्ग की महिला पितृसत्ता में ज्यादा दबी नहीं थी क्योंकि वह स्वयं कमाती थी। पूँजीपति वर्ग की महिलाएं सबसे ज्यादा दबी हुई थीं। उनका कार्य था बच्चे पैदा करना और पति की सम्पत्ति बन कर रहना।

समाजवादी नारीवादी विचारधारा वाली मरिया मीस जो जर्मनी की हैं, का कहना है कि महिला और पुरुष का प्रकृति के साथ अलग अलग तरह का रिश्ता होता है। महिलाओं का रिश्ता रचनात्मक और पुरुषों का विनाशकारी होता है। महिला प्रकृति की तरह स्वयं नए जीवन की रचना करती है। बिना बल के पुरुष अपने को हीन समझते हैं क्योंकि वे बच्चे को जन्म नहीं दे सकते।

गर्डा लर्नर का मानना है कि पितृसत्ता एक दिन में नहीं आई है। यह करीब 2500 सालों (3100 ईसा पूर्व से लेकर 600 ईसा पूर्व तक) की प्रक्रिया है, और इसके लिए कई घटक जिम्मेदार हैं। जाति व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था और पितृसत्ता का आपसी रिश्ता है। ये तीनों ही निजी सम्पत्ति की धारणा से उभरे हैं। इस व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए धर्मों का विकास हुआ। राज्य व्यवस्था ने दण्ड नीति की सहायता से वर्ग, जाति, पितृसत्ता और रंगभेद को बढ़ावा दिया।



परिशिष्ट 3: मूल्यांकन पत्र

कृपया निम्नलिखित को 1 से 10 के पैमाने पर अंक दें, 1 का अर्थ है सबसे कम और 10 का अर्थ है सबसे अधिक।

1. क्या यह प्रशिक्षण आपके संस्थागत काम के लिए उपयोगी है?
2. क्या यह प्रशिक्षण निजी तौर पर आपके लिए उपयोगी है?
3. कृपया निम्नलिखित का अपने शब्दों में उत्तर दें:
 - क) आपके अनुसार कौन सा सत्र उपयोगी नहीं था?
 - ख) कौन सा सत्र आपको सबसे अच्छा लगा?
 - ग) क्या आपको प्रशिक्षण का तरीका अच्छा लगा?
4. क्या इस प्रशिक्षण के बाद आपको लग रहा है कि आप जेंडर व पितृसत्ता के मुद्दे पर अब बेहतर तरीके से कार्य कर पाएंगे?



परिशिष्ट 4: सामग्री

- फिलप चार्ट
- रंगीन पेन
- प्रशिक्षण के उद्देश्य
- सेक्स तथा जेंडर की परिभाषा
- मूल्यांकन पत्र

इन सब सामग्रियों के अतिरिक्त जेंडर तथा पितृसत्ता की जानकारी देते समय फिल्मों को भी बहुत प्रभावी रूप में उपयोग किया जा सकता है। फिल्मों के माध्यम से महिलाओं के प्रति भेदभाव, समाज में उनकी स्थिति और परिवार में उनकी भूमिका के बारे में अच्छी जानकारी मिल सकती है। फिल्मों को पूरी तरह या उनके कुछ भाग को दिखाकर उस पर चर्चा की जा सकती है।



जेंडर व पितृसत्ता पर निम्नलिखित फ़िल्में उपयोगी हो सकती हैं:

मृत्युदंड (1997)

निर्देशक: प्रकाश झा

अवधि: 150 मिनट

सारांश – यह बिहार के एक गांव में तीन महिलाओं की कहानी है (जिनके किरदार माधुरी दिक्षित, शबाना आजमी तथा शिल्पा शिरोडकर द्वारा निभाए गए हैं) जो मिलकर पुरुषों की सत्ता तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं। यह फिल्म बिहार में व्याप्त सबसे भ्रष्ट ताकतों – जातिवादी जमींदार, हाथ मलता राजनेता, पतित महात्मा, निष्क्रिय सरकारी अधिकारी – को उजागर करती है। इसमें बदलते बिहार के नये आयाम भी नजर आते हैं जैसे नीची जाति का व्यापारी, निर्दयी ठेकेदार तथा इस सबसे खतरनाक पितृसत्ता – जहाँ एक पढ़ी लिखी महिला अपनी बात कहने से डरती नहीं है।

दामिनी (1993)

निर्देशक: राजकुमार संतोषी

अवधि: 175 मिनट

सारांश – फिल्म की कहानी मुख्य किरदार दामिनी के इर्दगिर्द घूमती है जो सच्चाई तथा सरलता का प्रतीक है। उसकी शादी एक बड़े घर में होती है जहाँ वह अपने देवर को बलात्कार करते हुए देखती है। वह उस लड़की को न्याय दिलाना चाहती है लेकिन उसके पति समेत पूरा परिवार उसका विरोध करता है, जिसके कारण उसे घर

छोड़ना पड़ता है। अंत में एक वकील न्याय दिलाने में उसकी सहायता करता है। फिल्म में दिखाया गया है कि सरकारी तंत्र कितना निष्क्रिय है और न्याय के लिए व्यक्ति को बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इस फिल्म में यह भी देख सकते हैं कि भारत में बलात्कार से संबंधित कानून में क्या कमियां हैं और किस तरह बलात्कारी आसानी से सजा से बच जाते हैं।

सत्ता (2003)

निर्देशक: मधुर भंडारकर

अवधि: 153 मिनट

सारांश – फिल्म सत्ता की कहानी एक ऐसे राजनैतिक परिवार आसपास घूमती है जहाँ महिलाओं पर सत्ता दिखाई जाती है और साथ ही सत्ता बनाए रखने के लिए भी महिलाओं का उपयोग किया जाता है। इस फिल्म के द्वारा यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है कि इन्हीं राजनैतिक परिवारों में जहाँ महिलाओं को परिवार की इज्जत के रूप में पेश किया जाता है वहीं परिवार के पुरुषों को हर प्रकार के बंधनों से मुक्त रखा जाता है। फिल्म से पता चलता है कि ऐसा नहीं है कि महिलाओं को सत्ता के दांवपेच की कला नहीं आती। यदि वे चाहें तो राजनीति भी बखूबी निभा सकती हैं और सत्ता में रह कर हर प्रकार से उसका उपयोग भी कर सकती हैं। फिल्म का अंत स्पष्ट रूप से बताता है कि शक्ति ही मुख्य तत्व है जो किसी को भी उठा या गिरा सकती है और आज की सत्ता पुरुषों के हाथ में है।



निशांत (1975)

निर्देशक: श्याम बेनेगल

अवधि: 140 मिनट

सारांश – फिल्म की कहानी पूरी तरह गांव में ऊँच और नीच जाति के बीच भेदभाव और विभेदों की कहानी है। भारत में किस तरह कुछ विशेष जातियों को उच्च कह दिया गया है और कुछ को निम्न। इस फिल्म में दिखाया गया है कि किस प्रकार गांव में ऊँची जाति के लोगों का ही दबदबा रहता है और गांव की हर चीज उन्हीं के अनुसार निश्चित होती है। इससे यह भी समझ आ जाता है कि उन जमींदारों के लिए नीची जाति की महिलाओं की ही नहीं बल्कि अपने घर की महिलाओं की भी क्या स्थिति है। अपनी जाति और पैसों के बल पर वे जब चाहे किसी की भी पत्नी को अपनी संतुष्टि के लिए अगवा करवा सकते हैं। उनके खिलाफ किसी की भी कुछ करने की हिम्मत नहीं होती। हालाँकि संविधान में सबको बराबर अधिकार दिया गया है परंतु फिल्म में दिखाया गया है कि कुछ जाति के लोगों को विशेष स्थान प्राप्त है। अभी भी कुछ लोग हैं जिन्हें जाति के नाम पर भेदभाव तथा तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

अंकुर (1974)

निर्देशक: श्याम बेनेगल

अवधि: 131 मिनट

सारांश – यह कहानी हैदराबाद क्षेत्र की एक सच्ची घटना पर आधारित है। फिल्म का नायक एक जमींदार का बेटा है जो एक मूक-बधिर किसान की पत्नी को पसंद



करता है और उससे शारीरिक संबंध भी बनाता है। बेटे की हरकतों पर पर्दा डालने के लिए उसका पिता उसकी शादी करवा देता है पर फिर भी वह उस किसान की पत्नी से अलग नहीं होता। बाद में वह गर्भवती हो जाती है। यह फिल्म जागीरदारी प्रथा की क्रूरता तथा उदासीनता को दिखाती है। फिल्म में मानव संबंधों के साथ साथ सामाजिक संबंधों को भी बहुत खूबी से दर्शाया गया है।

मातृभूमि : एक महिलाविहीन राष्ट्र (2003)

निर्देशक: मनीष झा

अवधि: 99 मिनट

सारांश – फिल्म भारत में एक भविष्यवादी काल्पनिक गांव पर आधारित है जहाँ लड़कियों को मार देने की प्रथा के कारण लड़कियों की बेहद कमी हो गई है। परिवार लड़कियों के लिए मारकाट पर उतारू हैं, माता-पिता लड़कों को लड़की बनाकर दहेज हथियाना चाहते हैं, पुरुष पशुओं के साथ सहवास करते हैं, और महिलाओं को केवल प्रजनन की वस्तु के रूप में तथा घर के कामकाज के लिए प्रयोग किया जाता है। यह एक कल्पना है कि यदि कन्या शिशु हत्या इसी प्रकार होती रही तो एक दिन देश की दशा ऐसी ही होगी।



નોટ

Lined writing area for page 58.

નોટ



Lined writing area for page 59.

નોટ



आभार

रिपोर्ट तैयार करने तथा उसे प्रशिक्षण गाइड में परिवर्तित करने में समय समय पर अनेक लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ है। सुनीता भदौरिया ने इस प्रशिक्षण कार्यशाला की रिपोर्ट तैयार की और क्रिया की प्रमदा मेनन तथा वीनू कक्कड़ ने उसमें सहयोग प्रदान किया। सुनीता भदौरिया द्वारा इस रिपोर्ट को प्रशिक्षण गाइड में परिवर्तित किया गया है। इस प्रकाशन को अंतिम स्वरूप देने में शालिनी सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्रशिक्षण संचालित करने तथा रिपोर्ट की समीक्षा करने के लिए क्रिया कमला भसीन की आभारी है।

सर्वाधिकार : क्रिया, (Creating Resources for Empowerment in Action)

प्रकाशन वर्ष : 2006

इस किताब में जो भी डिजाइन उपयोग किए गये हैं उनको बनानेवाले कलाकारों का हम धन्यवाद करना चाहते हैं।

